रजि. नं. पी.बी./जे.एल-/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष-73, अंक : 50, 9-12 मार्च 2017 तदनुसार 29 फाल्गुन सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

धनी-दरिद्र दोनों उसके याचक

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अस्य शासुरुभयासः सचन्ते हविष्मन्त उशिजो ये च मर्ताः।
दिवश्चित्पूर्वो न्यसादि होतापृच्छयो विश्पतिर्विक्षु वेधाः।।

-ऋ० १।६०।२

शब्दार्थ-ये = जो **हविष्मन्तः** = जीवन सामग्री-सम्पन्न धनी हैं, त्यागी हैं **च** = और जो **मर्ताः** = मनुष्य **उषिजः** = धनाभिलाषी हैं, धनकामी हैं वे **उभयासः** दोनों प्रकार के मनुष्य **अस्य** = इस **शासुः** = शासक के **सचन्ते** = शरणागत होते हैं। वह **होता** = दानी **आपृच्छयः** = जिज्ञास्य, जानने योग्य **विश्पतिः** = प्रजा-पालक **वेधा :** = विधाता, महान् ज्ञानी **दिवः** = द्यौ से, सूर्य से **चित्** = भी **पूर्वः** = पूर्व **विक्षु** = प्रजाओं में **न्यसादि** = रहता है।

व्याख्या-संसार में कोई ऐसा धनी नहीं मिलता, जो तृप्त हो। अपार-सा ऐश्वर्य होते हुए भी उसे धन की लालसा लगी रहती है। किसी मनुष्य को अपने से अधिक धनी न देखकर वह प्रभु से ही याचना करता है। अमीरों को उससे माँगने पर लाज नहीं आती। दरिद्र तो उससे माँगते ही हैं। वास्तव में सम्पत्ति का भाव और अभाव, धनिकता तथा दरिद्रता हृदय से, मन से सम्बन्ध रखती है, जिसके हृदय में जितनी अधिक लालसा, उतना ही वह दरिद्र। किसी ने कहा भी है-**'को हि दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला'**-संसार में कङ्गाल कौन है ? जिसकी तृष्णा, लालसा विशाल है। चाहे अभाव के कारण हो और चाहे लालसा के कारण, माँगना पड़ता है। इसलिए **'अस्य शासुरुभयासः सचन्ते'** = दोनों-धनी-दरिद्र, त्यागी-कामी उस शासक की शरण में जाते हैं, क्योंकि वह **'ईक्षे हि वस्व उभयस्य'** [ऋ० ६।१९।१०] दोनों प्रकार के धनों का स्वामी है।

धनी को जो धन चाहिए, वह भी भगवान् के पास है, कङ्गाल को जो चाहिए, वह भी भगवान् के पास है। त्यागी जो कुछ चाहता है, उसका अधिष्ठाता भी वही है और काम-कामी को जो चाहिए, उसका अधिपति भी वही है। जब सब प्रकार के धनों का स्वामी वही है तो वह ही-**आपृच्छय :** = पूछने योग्य है, सवाल करने योग्य है। उसको ही जानना चाहिए। वेद ने कहा भी है **'तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या'** [ऋ० १०।८२।३] उसी संप्रश्न = आपृच्छय = जिज्ञास्य को सम्पूर्ण भुवन प्राप्त हो रहे हैं। तैत्तिरीयोपनिषत् की भृगुवल्ली के प्रथमानुवाक में कहा है-

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति,
तद्विजिज्ञासस्व, तद् ब्रह्म।।

जिससे ये सब पदार्थ उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न हुए जिससे जीते हैं, मरते हुए जिसमें जाते हैं, उसके सम्बन्ध में पूछ, जानने की इच्छा कर, वही ब्रह्म है। यह वेद के 'आपृच्छय : और संप्रश्नम्' की व्याख्या है। वही आपृच्छय दानी है, वही प्रजापालक है। वह लौकिक राजा की भाँति प्रजा के पश्चात् उत्पन्न नहीं होता। वरन् वह-**'दिवश्चित्पूर्वो न्यसादि विक्षु'** = सूर्य से भी पूर्व प्रजाओं में रह रहा है। इस संसार में-सौरमण्डल में सबसे पूर्व सूर्य उत्पन्न होता है। शेष सृष्टि उसके पश्चात् होती है, किन्तु भगवान् उससे भी पूर्व अपनी शाश्वत प्रजाओं-जीवों और परमाणुओं में विद्यमान रहता है। हुआ जो वह **'पुरः स्थाता'** [ऋ० ८।४६।१३] = सबसे पहले रहने वाला।

प्रभो ! जब तू सबसे पूर्व विद्यमान है और सभी तुझसे माँगते हैं तो हमारी भी माँग सुन ले-**'यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर'** [ऋ० ५।३९।२] जिस धन को तू सर्वश्रेष्ठ मानता है, वह हमें दे।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

सत्संग का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर गुरदासपुर में श्रीमति ज्योति नन्दा जी की अध्यक्षता में सत्संग सभा का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य समाज के सुयोग्य विद्वान (सोलन वाले) आर्य नरेश जी को आमन्त्रित किया गया। उन्होंने अपने गहन प्रवचनों द्वारा सभी उपस्थित लोगों को अनुगृहित किया। जीवन पथ पर चलने के लिये मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि सत्य को कभी पराजित नहीं किया जा सकता। झूठ और सच का निषेध किया अन्ततः सत्य का मार्ग अपनाओ। श्रीमति शिक्षा, सविता सुदर्शन शर्मा, सुलभा जी ने एक अति सुन्दर सम्मिलित भजन का गायन किया। सभा में सभी स्कूलों जिया लाल मित्तल स्कूल के स्टाफ मैम्बर उपस्थित थे। प्रेम अम्बा जी ने प्रसाद की व्यवस्था की और सुदर्शन शर्मा जी ने उपस्थित जनों का धन्यवाद किया। शास्त्री राम निवास जी ने शान्ति पाठ करवा कर सभा का विसर्जन किया।

महर्षि देव दयानन्द एक सच्चे गुरु थे

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

सच्चा गुरु वही होता है जो अपने शिष्यों को अच्छी शिक्षा देकर अज्ञान से ज्ञान की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर कुपथ से सुपथ की ओर ले जाता है। अन्धविश्वास, पाखण्ड व मूर्त्तिपूजा से हटाकर ईश्वर की सच्ची उपासना जो सन्ध्या, हवन, सत्संग व अष्टांग योग है। उनकी ओर से जाता है। इन कार्यों में देव दयानन्द ने अपनी एक विशेष अच्छी व अलग ही पहचान बना रखी है। यह सद् गुरु श्रृखंला आदि सृष्टि से चली आ रही है और सृष्टि के अन्त तक चलती रहेगी कारण मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, उसको सही रास्ता दिखाने के लिए अपने से अच्छा एक सच्चे गुरु की आवश्यकता पहले भी सदा रही है और आगे भी रहती रहेगी।

जैसा कि मैंने लिखा कि सद् गुरु की श्रृंखला सृष्टि के आदि से चली आ रही है। देवों के देव, पिताओं के पिता और गुरुओं के गुरु ईश्वर ने सृष्टि के आदि में, सृष्टि की पूरी रचना करने बाद मनुष्यों की उत्पत्ति अनेक नौजवान स्त्री-पुरुषों के रूप में की जिससे आगे सृष्टि चलती रहे। तभी ईश्वर ने मनुष्यों को सही मार्ग दिखाने के लिए यानि धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार करते हुए मोक्ष जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है इसे प्राप्त करने के लिए सब से अधिक पवित्र आत्मा वाले चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा था, उनके श्री मुख से चार वेदों को जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, उनको उच्चारित करवाया। वह वेद-ज्ञान उपस्थित सभी पुरुषों वा स्त्रियों ने सुना, परन्तु उनमें भी ब्रह्मा जो सर्वश्रेष्ठ ऋषि थे, जिनकी स्मरण शक्ति बहुत तेज थी, उन्होंने इन चारों वेदों को कठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाते रहे फिर यह धर्म पिता, पुत्र को, गुरू शिष्य को सुनाना लाखों वर्षों तक चलता रहा। जब स्याही, कलम, दवात, कागज़ का अविष्कार हो गया तब इन चारों वेदों को पुस्तक बद्ध कर दिया जो अभी तक चलते आ रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि के आदि से मनुष्य-मात्र के कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान देने वाला ईश्वर सर्व प्रथम सद् गुरु हुआ। फिर ब्रह्मा ने उन वेदों को कण्ठस्थ करके आम जनता को सुनाते रहे इसलिए दूसरा सद्गुरु ब्रह्मा हुए। तत्पश्चात् त्रैता में रामायण काल में हमें दो सुखद्-गुरु दिखाई देते हैं जिनके नाम हैं वशिष्ठ व विश्वामित्र जिन्होंने रावण कुम्भकरण जैसे बलशाली व अन्यायी राक्षसों का संहार करने के लिए एक योजना वद्ध तरीके से श्री राम और लक्ष्मण को राजा दशरथ से लेकर उन्हें धनुर्विद्या तथा अन्य विद्याएँ सिखाई जिससे वे रावण को उसके पूरे परिवार सहित मारने में सफल हुए जिससे आम जनता को सुखी बनाया और ऋषि-मुनियों के यज्ञों को अपवित्र होने से बचाया। इसलिए ये भी सद्गुरु की श्रेणी में आते हैं। फिर हम जब आगे बढ़ते हैं तो द्वापर में महाभारत के समय दो गुरु दिखाई देते हैं। गुरु, द्रौण और गुरु कृपाचार्य पर इनको हम सद्गुरु की श्रेणी में नहीं गिनते कारण इन्होंने अपने स्वार्थ के लिए अपने कर्त्तव्य को त्याग कर पापी दुर्योधन का साथ देकर अधर्म का काम किया। तत्पश्चात् भारत के इतिहास का जब हम सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करते हैं तो चन्द्र-गुप्त मौर्य के सद्गुरु चाणक्य का नाम आता है जिसने चन्द्रगुप्त जैसे योग्य बच्चे को सुशिक्षित व शस्त्र विद्या में निपुण करके एक अच्छा योद्धा बनाकर पापी राजा महानन्द का वध करवा कर चन्द्र गुप्त को राजा बनाया और जनता को सुखी बनाया। इसके बाद हम आगे बढ़ते हैं तो शेर शिवा जी के सद्गुरु रामदास पर हमारी दृष्टि पड़ती है जिसने शेर शिवाजी को युद्ध विद्या में निपुण करके औरंगजेब जैसे पापी बादशाह के राज्य को नष्ट करवाया। फिर हम आगे चलते है वो हमारी दृष्टि उस महान् सद्गुरु चक्षुविहीन स्वामी विरजानन्द पर पड़ती है जिसने अपने योग्य शिष्य बाल ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द को तीन वर्ष अपनी गोद में रखकर उसको वेदों की कुन्जी प्रदान की जिससे महर्षि दयानन्द ने, जो उस समय आचार्यसायण व उव्वट द्वारा वेदों के जो गलत और अश्लील भाष्य किये थे उनको गलत साबित करके, वेदों के सही भाष्य करके विश्व में वेदों का प्रकाश किया। महर्षि दयानन्द ने न केवल वेदों का सही भाष्य ही किया बल्कि अपने सद्गुरु विरजानन्द को गुरु दक्षिणा के रूप में वचन दिया था। पूरी उम्र उन वचनों का पालन करते हुए विश्व में जो अज्ञान के कारण अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला था उसको रोकने की किसी में हिम्मत नहीं थी, उस समय देव दयानन्द ने अपनी जान को जोखिम में डाल कर वेदों के सही अर्थ बतलाकर उस अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटाया और दु:खियों, असहायों व निर्बलों का सहारा बने। गाय की चीत्कार को सुना और विधवाओं के आँसू पौंछे तथा आजादी का शंख नाद फूँका। इस प्रकार देश में नव जागृति का संचार किया।

महर्षि दयानन्द नव जागरण के पुरोधा कहलाए जाते हैं। जब देव दयानन्द अपने सद्गुरु विरजानन्द की कुटिया छोड़कर अपने कार्य क्षेत्र में उतरे, उस समय देश की स्थिति बड़ी ही नाजुक व भयावह थी। महा भारत के भीषण युद्ध में सभी विद्वान्, योद्धा, आचार्य, पुरोहित आदि के मारे जाने से वेद ज्ञान प्राय: लुप्त हो गया था। जिससे देश में अज्ञान व अविद्या, के फैलने से अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया था। जाति कर्म से न मानकर जन्म से मानी जाने लगी थी। स्वार्थी पण्डितों ने अपना पेट भरने के लिए अनेक मत-मतान्तर चला दिये थे, जिससे कम पढ़े-लिखे व अविद्वान भी विद्वान समझे जाने लगे थे। ईश्वर की सच्ची उपासना जो सन्ध्या, हवन, सत्संग व अष्टांग योग है, इनको छोड़ कर उन स्वार्थी अधकचरे पण्ड़ितों ने राम और कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर उनकी तथा अन्य बनावटी व निरर्थक देवी-देवताओं की मूर्त्ति बनाकर उनकी ही पूजा करवाने लगे थे। और उसी को ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया जाने लगा था। कृष्ण का अश्लील व भद्दे चरित्र का वर्णन करके देश में अश्लीलता का ताण्डव नृत्य हो रहा था।

ऐसी स्थिति में देव दयानन्द ने एक सद्गुरु और एक अच्छे वैद्य के रूप में वेदों का पुन: प्रकाश करके देश को नई दिशा प्रदान की जिससे देश में नव जागृति आई और देश वेदों के प्रकाश से प्रकाशित होकर पुन: उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर हुआ। इसलिए देव दयानन्द जिसने देश को सही मार्ग पर चलना सिखाया और अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए वेदों की ओर लौटो का आह्वान् किया जिससे देश में नव चेतना आई, इसलिए देव दयानन्द को हम सच्चा गुरु कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसीलिए महर्षि अरविन्द ने कहा था कि-

मैं हिमालय की अनेक चोटियाँ देख रहा हूँ जिनके ऊपर देश के महापुरुष बैठे हुए हैं। जो चोटी सबसे ऊँची है, उस के ऊपर महर्षि देव दयानन्द बैठे दिखाई दे रहे है।। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

सौ बार जन्म लेंगें,
सौ बार फन्ना होंगे,
एहसान ! दयानन्द के,
फिर भी न अदा होंगे।

सम्पादकीय......

सभी आर्यजनों का हार्दिक धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से आर्य कॉलेज महिला विभाग सिविल लाईन्ज लुधियाना में 19 फरवरी 2017 को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भव्य आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समस्त पंजाब से आर्य महानुभाव इस भव्य समारोह में पधारे हुए थे। सभी के पावन सहयोग से यह आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य वेद प्रचार और वेद पर आधारित महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों का प्रचार और प्रसार करना है। आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द का मुख्य उद्देश्य लोगों को पाखण्डों, अन्धविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, मूर्तिपूजा के श्राप से मुक्त करना था। अपना आशय स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि मेरा किसी भी नवीन मत को चलाने का लेषमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है अर्थात् यूं कहें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का उद्देश्य संसार में सत्य पर आधारित वेद के सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित करना था। महाभारत युद्ध के पश्चात हम जिस रसातल की ओर जा रहे थे। अपने सत्य ग्रन्थ वेदों को भूलकर पुराणों और अनार्ष ग्रन्थों में पड़कर समाज में बहुत सी नई कुरीतियों ने जन्म लिया था। मूर्तिपूजा के कारण समाज की बहुत हानि हो रही थी। लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुख हो रहे थे। सामाजिक कुरीतियों के कारण समाज कई टुकडों में बंट चुका था। जातिवाद और छूआछूत के कारण लोगों में एक दूसरे के प्रति द्वेष और छल कपट की भावनांए थी। जिसके परिणामस्वरूप हम पहले मुगलों के आधीन रहे और उसके पश्चात हमें अंग्रेजों की दासता सहनी पड़ी। ऐसे समय में एक ऐसी क्रान्ति की आवश्यकता थी जो राष्ट्र को जहां सामाजिक कुरीतियों से मुक्त कर सकें वहीं पर धर्म पर नाम पर हो रहे व्यापार से लोगों को छुटकारा मिले। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिससे धर्म के नाम पर व्यापार करने वालों की जड़े हिल गई और समाज में फैल रही कुरीतियों से भी लोगों से छुटकारा मिला। आर्य समाज ने एक ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिसे धधकती आग का नाम दिया गया। जिस आग में सभी सामाजिक कुरीतियां जलकर भस्म हो गई। इसके साथ ही लोगों में स्वतन्त्रता के प्रति भाव जागृत हुए। आर्य समाज ने अपने आरम्भिक काल से लेकर आज तक समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया है और आगे भी करता रहेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इस भव्य आर्य महासम्मेलन को मनाने का यही उद्देश्य था कि लोगों में महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के प्रति जागरूकता बढ़े। समाज से कुरीतियों का नाश हो, लोग पाखण्ड और अन्धविश्वास में न भटकें, धर्म के नाम पर होने वाला व्यवसाय बन्द हो। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का हर संभव प्रयास है कि आर्य समाज के लक्ष्य और उद्देश्य की प्रति आम जनता को जागृत किया जाए। इसके लिए सभा में वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है। पंजाब प्रान्त के साथ-साथ अन्य प्रान्तों के लोग भी सभा कार्यालय में प्रचारार्थ साहित्य लेने के लिए आते हैं। इसके साथ ही सभा के द्वारा सभी संस्थाओं एवं गुरूकुलों को आर्थिक सहयोग दिया जाता है ताकि वेद प्रचार का कार्य चलता रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब निरन्तर आगे बढ़ रही है। 19 फरवरी को जिस उत्साह और लग्न के साथ आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस मनाया गया उससे सभी आर्यों को एक प्रेरणा मिली है। इस अवसर पर पंजाब भर से आए हुए आर्यजनों का उत्साह देखने योग्य था। सारा पण्ड़ाल खचाखच भरा हुआ था और वैदिक जयघोषों से पण्ड़ाल गुजांयमान हो रहा था। संगच्छध्वं संवदध्वं की भावना से ही आर्य समाज की उन्नति हो सकती है, आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है। इस भावना का सम्पूर्ण दृश्य वहां पर देखने को मिला। लोकैषणा को त्याग कर निस्वार्थ भाव से किया गया कार्य ही समाज के लिए फलदायक सिद्ध होता है। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा सभी कार्य आपसी सहयोग और उत्साह के साथ ही सम्पन्न होते हैं। इस आर्य महासम्मेलन में आकर आप लोगों से अपने सहयोग, उत्साह एवं समर्पण का परिचय दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आप सबके सहयोग से आगे भी इसी प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करती रहेगी और वेद प्रचार के कार्यों को इसी प्रकार जारी रखेगी।

अंत में मैं सभी आर्य समाजों, एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस भव्य आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया। इस कार्यक्रम की सफलता सभी आर्यों की सफलता है। सभा आप सबके सहयोग से ही आगे बढ़ रही है। सभी आर्यजनों ने जिस उत्साह और उमंग के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया उसके लिए वे सभी धन्यवाद के पात्र है। आगे भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आपसे इसी प्रकार के सहयोग की कामना करती है। सभी आर्य समाजें एकजुट होकर वेद प्रचार के कार्य में लग जाएं, महर्षि दयानन्द के सन्देश को घर-घर पहुंचाने का प्रयास करें, सभी आर्यजन आर्य समाज के दस नियमों का पालन करते हुए आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें। सभा के द्वारा आपका हर सम्भव सहयोग किया जाएगा। वेद प्रचार करना हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। इस लक्ष्य को लेकर सभी आर्य समाजें अपने-अपने क्षेत्र में वेद प्रचार का कार्य करें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश में प्रवेश प्रारम्भ

आपको जानकर अपार हर्ष होगा कि गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौगिक क्रियायें करायी जाती है। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। छात्रों को सादा एवं पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है। नये सत्र के प्रवेश 01 अप्रैल 2017 से प्रारम्भ हो रहे हैं। यहाँ पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएं उ० प्र० माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का 5वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। यहाँ के स्नातक शिक्षक, पुरोहित तथा सैन्य, पुलिस पी० ए० सी० वन विभाग, लोक सेवा आयोग आदि विभागों में कार्यरत हैं। यहाँ पर छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष बल दिया जाता है।

कृपया अपने होनहार बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाष पर भी वार्ता करके प्रवेश दिलायें। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय में 2 रसोइया, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क तथा संस्कृत संस्थान के मानदेय पर तीन संस्कृत अध्यापक व दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है शीघ्र सम्पर्क करें। अधिक जानकारी फोन से प्राप्त की जा सकती है।

-प्रेमशंकर मिश्र प्रधानाचार्य 9411481624, 9997047680

ऋषि बोध से बोध

ले. -नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि के पवित्र पावन अवसर पर समस्त आर्य जन ऋषि बोधोत्सव मनाते हैं। इसी दिन बालक मूलशंकर के मन में शिवरात्रि की उस रात को जब अन्य सभी सो रहे थे तभी सही अर्थों में जागते बालक मूलशंकर ने जब चूहों को शिवलिंग पर उत्पात करते प्रसाद खाकर मल मूत्र विसर्जन करते देखा तो उस शुभरात्रि पर बालक मूलशंकर के मन में तीव्र उत्कंठा उत्पन्न हुई कि यह शिवलिंग जो स्वयं अपनी रक्षा उत्पात कर रहे चूहों से नहीं कर पा रहा, वह सृष्टि का रचयिता, पालनकर्ता, न्यायकर्ता, संहारक शिव कैसे हो सकता है। बस बालक के मन में उठी इसी तीव्र उत्कंठा ने मूलशंकर के स्वामी दयानन्द बनने की यात्रा का शुभारंभ कर दिया और उसने ईश्वर के सत्यस्वरूप को वेदों की सही व्याख्या करते हुए रखा। देव दयानन्द द्वारा दिए गए ईश्वर के सत्यस्वरूप, वैदिक मान्यताओं, आर्य सिद्धांतों और नियमों को हम आर्य जन मानते हैं। अर्थात् ऋषि बोध से हम सभी को बोध लेना चाहिए।

अब यक्ष प्रश्न उत्पन्न होता है क्या हम सही मायनों में ऋषि बोध से बोध लेकर अब सर्वथा सरल रूप में सुलभ आर्य मान्यताओं को सीख समझ कर अपने जीवन में उतार कर एक सच्चे आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बन पाए। क्या हम देव दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लक्ष्य की प्राप्ति के प्रथम सोपान कृण्वन्तो स्वयमार्यम् को भी पूरा सके ? क्या हम सही अर्थों में ऋषि बोधोत्सव को मना रहे हैं या फिर बोधोत्सव मनाने के अधिकारी है ? अब इन प्रश्नों पर विस्तार से विचार करते हैं।

देव दयानन्द ने आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्यस्वरूप को हम सभी के लिए दिया था और जड़पूजा को आर्यावर्त के लिए घातक और लम्बी गुलामी का कारण बताया। परन्तु हम विचार करें क्या आज भी चेतन मानव जड़ के आगे माथा नहीं पीट रहा। क्या आज भी हमारी मातायें, बहनें, बेटियां तथाकथित मुस्लिम कब्रों, पीरों पर अज्ञानतावश सिर नहीं पटक रहीं ? यदि यह स्थिति आज भी व्यापक है तो क्या हमने ऋषि बोध से कुछ बोध लिया।

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य देव दयानन्द ने संसार का उपकार करना बताया था। क्या आज हम आर्य समाज के सेवा कार्यों को इतना व्यापक कर पाए हैं कि लोग हमारा अनुसरण करने लगें। क्या आर्य समाजों में संसार का उपकार करने वाले सेवा कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है। क्या हम दूसरों के दुःख से दुःखी होकर उसकी सहायता करने के लिए तत्पर होते हैं। यदि नहीं तो क्या हम कह सकते हैं कि हमने अपने ऋषि के बोध से कुछ बोध लिया।

आर्य समाज की स्थापना पाखंड खंडन, सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों, विषमताओं के विरूद्ध एक जन आन्दोलन के रूप में की गई थी। क्या आर्य समाज पाखंड खंडन और सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन कर पाया। क्या आज भी समाज में डायन, भूत प्रेत, बाधा, चमत्कार, नामदान जैसी बुराइयां हमारा शोषण नहीं कर रहीं। क्या आज भी तथाकथित कथावाचक हमारी अबोधता और धर्मभीरूता का लाभ उठाकर ईश्वर के स्वयंभू ठेकेदार या स्वयं को ईश्वर घोषित करके हमारा शोषण नहीं कर रहे। यदि ऐसा है तो क्या हम सही मायनों में बोधोत्सव मनाने के अधिकारी नहीं हैं।

देव दयानन्द ने जितना उपकार इस पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण सोच पर तीखा प्रहार करते हुए नारी जाति के उत्थान के लिए किया उसके लिए नारी जाति को सदैव उनका ऋणी बना दिया। देव दयानन्द ने बालविवाह, दहेजप्रथा, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, नारी उत्पीड़न पर चोट करते हुए नारी शिक्षा का द्वार खोला। परन्तु क्या आज भी नारी पर अत्याचार बंद हो गया। क्या आज भी निर्भया जैसे सामूहिक रेपकांड या फिर हॉनर किलिंग जैसी बुराईयां विद्यमान नहीं है। क्या आज भी कोमल संवेदनशील ममतामयी मां को उसके ही गर्भ में जन्म ले रहे उसके प्रतिरूप एक कन्याभ्रूण को उसके सर्वाधिक सुरक्षित स्थान पर मार देने के लिए विवश नहीं किया जाता। यदि ऐसा हो रहा है तो आर्य समाज और शेष समस्त देश ने देव दयानन्द के बताए आदर्शों पर चलकर बोध कब लिया।

देव दयानन्द ने आर्ष शिक्षा पद्धति पर बल दिया। उनके बताए मार्ग पर चलते हुए जहां महामानव स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति की पुनः स्थापना गुरूकुल खोलते हुए की वहां त्यागमूर्ति श्वेतवस्त्रों में संन्यासी महात्मा हंसराज ने एक आन्दोलन के रूप में प्राचीन और नवीन को जोड़कर डी. ए. वी. आन्दोलन प्रारम्भ किया। परन्तु हमने देश की आजादी के उपरान्त गुलामी की मानसिकता वाली मैकाले की उस शिक्षा प्रणाली को अपना लिया जो हमारे देश के भावी नागिरकों को आज भी मानसिक दासता के बंधन में जकड़ रही है। आज भी हमारी इस शिक्षा व्यवस्था में आर्य संस्कार देकर बच्चों को एक अच्छा मनुष्य सच्चा आर्य बनाने का सर्वथा अभाव है। ऐसे में क्या हम कह सकते हैं कि हम बोधोत्सव मनाने के सच्चे अधिकारी हैं या फिर हमने ऋषि बोध से कोई बोध लिया।

एक सामान्य वाहन चालक भी अपने आगे चल रहे वाहन को देखकर किसी गड्ढे से बचने के लिए सही दिशा का चयन करके मार्ग परिवर्तन कर लेता है। परन्तु ना जाने क्यों हम आज भी मानसिक दासता के बंधन में बंधे तथाकथित विकास के नाम पर पाश्चात्य अंधानुकरण करते हुए अपने साफ दिखाई दे रहे विनाश की ओर तीव्र गति से दौड़ रहे हैं। हमें गति के रोमांच में अपना विनाश और इतिहास की तलहटी में पड़ी सभ्यताओं के नरकंकाल दिखाई नहीं दे रहे जो अट्टाहस कर रहे हैं आओ तुम भी इतिहास की खाईयों में समा जाओ। यदि सही मायनों में ऋषि बोधोत्सव मनाना है तो आर्य सिद्धांतों मान्यताओं को जान मान कर स्वयं आर्य बनते हुए सबको आर्य बनाना पड़ेगा।

आर्य समाज जालन्धर छावनी में ऋषिबोधोत्सव मनाया

आर्य समाज जालन्धर छावनी में 24-02-2017 को ऋषि बोध उत्सव बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। जिसमें हवन यज्ञ हुआ और 24-02-2017 के यजमान थे। श्रीमति प्रेम महाजन, श्री मनीश महाजन, श्रीमति रागिनी महाजन और उनका बेटा नमन महाजन, श्री राकेश आर्य, श्रीमति वीणा आर्य और उनकी पुत्र वधू-रिचा आर्य थे। हवन यज्ञ के बाद मोना गुप्ता ने बहुत ही अच्छा भजन प्रस्तुत किया। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित नंद दुलाल थे। के ऐल आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल, जालन्धर छावनी की छात्राओं ने बहुत ही सुन्दर भजन सुनाएं तथा स्वामी दयानंद जी के जीवन पर प्रकाश डाला। आचार्य सुरेश कुमार शास्त्री जी ने इस पर्व पर स्वामी दयानंद जी के जीवन के बारे में अच्छा प्रवचन दिया। जिसकी सब ने प्रशंसा की। श्रीमति प्रेम गुप्ता, धर्म पत्नी आर्य समाज के माननीय प्रधान श्री चन्द्र गुप्ता जी को उनकी सेवाओं के कारण उन्हें सम्मानित किया। मैडम, श्रीमति अरूणा तलवाड़ जो कि 31-08-2016 को रिटायर्ड हो चुके है। परन्तु स्कूल की निशुल्क सेवा कर रहे हैं। स्त्री आर्य समाज जालंधर छावनी ने इनको भी सम्मानित किया। के. ऐल आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल की मुख्याध्यापिका और अध्यापिकाओं ने इस सुअवसर पर बढ़-चढ़ कर भाग लिया। श्री चन्द्रगुप्ता, श्री राकेश आर्य, गनपत राय सोनी, श्री अशोक जावेद, श्री अशोक शर्मा, श्री अशोक वर्मा, श्री रघुबीर सिंह आन्दोलन श्री जवाहर लाल महाजन, श्री अयोध्या प्रसाद अग्रवाल, श्री रघुनाथ ठाकुर, श्री संदीप सेठी, श्री मुनीश महाजन, श्री रमेश जिंदल, श्री विक्रम कपिल, श्री संजीव गुप्ता और स्त्री आर्य समाज के सदस्य श्रीमति प्रेम महाजन, श्रीमति प्रेम गुप्ता, श्यामा अग्रवाल, श्रीमति श्रुति अग्रवाल, श्रीमति संतोष जैन, श्रीमति कांता अग्रवाल, श्रीमति राज गुप्ता, श्रीमति सुदेश महाजन, श्रीमति सावित्री देवी, श्रीमति वीणा दीवान, अनु दीवान। सब ने इस पर्व को मनाने में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इसके बाद ऋषि लंगर बाँटा गया जिसे सब बच्चों ने राहुल महाजन, आदित्य महाजन, कनव महाजन, कनिष्क महाजन, नमन महाजन ने बड़ी ही श्रद्धापूर्वक बँटवाया।

-जवाहर लाल महाजन मन्त्री आर्य समाज जालन्धर छावनी

जिजीविषा (जीने की इच्छा)

-डॉ. सुभाष वेदालंकार, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ईश्वर वाणी रूप चारों वेद विश्व की प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम निधि हैं। विश्ववाङ्मय में वेदों का अतिशय गौरवपूर्ण स्थान है। ये वेद धर्म, आयुर्वेद, कामशास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, गणित, विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, प्राणीशास्त्र, निर्वचनशास्त्र आदि विविध-ज्ञान-विज्ञान के आदि स्रोत हैं। विश्व विश्रुत भारतीय संस्कृति के आधारभूत ये वेद कर्तव्य अकर्तव्य के उपदेष्टा, विश्वहित संपादक, आचार के संचारक, सुख-शान्ति के साधक, शुभ-अशुभ के निर्दशक, अज्ञानान्धकार को नष्ट कर ज्ञान ज्योति के ज्वालक हैं। संसार की समस्त कला कलाप के मूल स्रोत हैं। निराशा को भगाकर आशा का संचार करने वाले हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय को सिद्ध करने वाले हैं। शास्त्रकार वेदों के स्वत: प्रामाण्य को समोद स्वीकार कहते हैं। ''वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'', ''भूतं भव्यं भविष्यञ्च सर्व वेदात्प्रसिद्धयति'' आदि वचनों द्वारा भगवान मनु ने वेद के महत्व का डिम-डिम घोष किया है। वेद पदे-पदे जिजीविषा का उपदेश देते हैं। जिजीविषा पद का सामान्य अर्थ है 'जीवितुमिच्छा' अर्थात् जीने की इच्छा। अथवा दीर्घ जीवन प्राप्त करने की दृढ़ अभिलाषा। वेदादिशास्त्रों में मनुष्य को शतायु अर्थात् सौ वर्ष की आयु वाला बताया गया है। 'शतायुर्वै पुरुष:'। वेदों का आदेश और उपदेश है कि मानव सौ वर्ष तक जीने की इच्छा अवश्य करे। उससे पूर्व मृत्यु का विचार तक मन में न लाये। यजुर्वेद 40वें अध्याय का द्वितीय मन्त्र सदैव प्रेरणा देता है- ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समा:।'' अथर्ववेद का एक मन्त्र 3 सौ वर्ष तक जीने की प्रेरणा देता है-

त्र्यायुषं जमदग्ने: कश्यपस्य त्र्यायुषम्।

यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।।

'शतायुर्वै पुरुष:' वचनानुसार, सौ वर्ष की आयु वाला पुरुष तीन सौ वर्ष तक जीवित रहे। आर्यजन सन्ध्या करते समय तक मन्त्र प्रतिदिन प्रात: सायं बोला करते हैं-

'तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्, पश्येम शरद: शतं जीवेम शरद: शतं, श्रृणुयाम शरद: शतमदीना: स्याम शरद: शतं प्रब्रवाम शरद: शतम् भूयश्च शरद: शतात्।'

यहां उपदेश है कि सौ साल तक तो जियें ही, उससे भी अधिक वर्ष तक जीवित रहें। मन्त्र में कहा गया है कि केवल यथा तथा जियें ही नहीं, अपितु स्वस्थ रहते हुए ही जियें। आंखें, कान, वाणी, ठीक प्रकार से काम करते रहें। एक वाक्य 'अदीना: स्याम शरद: शतम्' है, सौ वर्ष तक हम अदीन होकर जियें। जीवन पर्यन्त दीन हीन न बनें। किसी भी प्रसंग में किसी भी प्रकार पराश्रित न हों। इतने स्वस्थ और समर्थ रहें कि किसी की सहायता से जीवन न चलाना पड़े। मृत्यु तो सुनिश्चित है, पंचतन्त्र में कहा गया है-

मृत्यो र्बिभेषि किं बालं न स भीतं विमुञ्चति

अद्य वाब्द शतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुव:।।

ओ बच्चे मृत्यु से क्या डरता है, वह डरे हुए को नहीं छोड़ती है, आज या सौ वर्ष बाद प्राणियों की मृत्यु सुनिश्चित है। नीतिकारों का कथन है कि मृत्यु ने बाल पकड़ रखे हैं न जाने कब खींच कर ले जाये। अत: जब तक जियो स्वयं को अजर अमर मानते हुए जियो विद्या और अर्थ का चिन्तन करो। वेद में आदेश है वृद्धावस्था से पूर्व किसी स्थिति में नहीं मरना है, 'जरस: पुरा मा मृथा:' मृत्युञ्जय मन्त्र बहुत प्रसिद्ध है तथा सदैव स्मरण करने योग्य है।

त्र्यंम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

मन्त्र में निर्देश है कि जैसे पका हुआ खरबूजा स्वत: ही लता से छूट जाता है, उसी प्रकार पुरुष पूर्ण आयु प्राप्त करके प्राणत्याग करे। वह अमृत से दूर न हो। अमृत पद वेद में अनेक बार आया है, इसके तीन अर्थ हैं-

(1) मुक्ति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति

(2) मृत्यु को वश में करना

(3) दीर्घ आयु प्राप्त करना

वेद एवं उपनिषदों में 'अमृतत्वं भजन्ते' 'न पुनरावर्तते' इत्यादि वचन मोक्ष पद प्राप्ति का ही संकेत देते हैं। अपि च 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत' ब्रह्मचर्य के तप से दिव्य पुरुषों ने मृत्यु को भी दूर भगाया। **'मृत्योर्मा अमृतं गमय'** मृत्यु से मुझे अमृत (दीर्घ जीवन) की ओर ले जाओ। आदि वेद वचन मृत्यु के वशीकरण की शिक्षा देते हैं।

महाभारत में भीष्म पितामह ने ब्रह्मचर्य के तप से ही स्वेच्छा मृत्यु प्राप्त की थी। महर्षि दयानन्द को 16 बार विष दिया गया। परन्तु ब्रह्मचर्य और योग के बल पर 15 बार उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त की। 16वीं बार भयावह विषपान करने पर उन्हें मृत्यु सन्निकट प्रतीत हुई तो भी उन्होंने घोषणा की दीपावली पर देह त्याग करूंगा, तदनुसार मृत्यु को धक्का दिया। स्वेच्छा से मृत्यु का वरण किया।

अमृत पद का तीसरा अर्थ है दीर्घ जीवन प्राप्त करना। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है-

एतद्वैमनुष्यस्यामृतत्त्वं यत् सर्वमायुरेति।

य एष शतं वर्षाणि यो वा भूयांसि जीवति स हैवं वेद, अमृतत्वमाप्नोति।।

इस मन्त्र से स्पष्टत: ज्ञात होता है कि अमृतत्व ही पूर्ण आयु है तथा पूर्ण आयु पथ के 100 वर्ष की आयु प्राप्त करना है। जो इस बात को समझ लेता है वही अमृतत्व को प्राप्त करता है। ऋग्वेद का एक मन्त्र बहुत प्रसिद्ध है और उसमें उपदेश है कि मृत्यु को दूर धकेल दो, दीर्घ आयु धारण करो।

मृत्यो: पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयु: प्रतरं दधाना:।

आप्यायमाना: प्रजया धनेन शुद्धा: पूता: भवत यज्ञियास।।

-ऋ. 10.18

मन्त्र में ईश्वर उपदेश देता है कि लम्बी आयु प्राप्त करते हुए शुद्ध, पवित्र और यज्ञकर्ता बनो। ऐसा ही वचन अथर्ववेद के 8.2.2 में दृष्टिगोचर होता है''अवमुञ्चुन् मृत्यु पाशमशस्तिं द्राघीय आयु: प्रतरं दधाति।''

यहां निन्दित आचरण को अशस्ति कहा गया है। ईश्वर का उपदेश है, अशस्ति का त्याग करो एवं दीर्घ आयु प्राप्त करो। वेद आदि सभी शास्त्र मृत्यु की अपरिहार्यता बताकर दीर्घायु को प्राप्त करने की प्रेरणा देते हैं। निरन्तर लम्बा जीवन जीने की आज्ञा देते हैं। जिन मन्त्रों में दीर्घ आयु की 100 वर्ष तक जीने की प्रेरणा है, वहां उसके उपायों की भी चर्चा है।

जिजीविषा तभी पैदा हो सकती है, जब मनुष्य दीर्घ जीवन जीने का दृढ़ संकल्प ले, मृत्यु के आने का विचार भी मस्तिष्क में न लाये। जीवन में निराशा को न पनपने दे। सेवा निवृत्ति के उपरान्त प्राय: मनुष्यों के मन में विचार आता है, अब मृत्यु का समय आने वाला है। वृद्ध व्यक्ति भी यही सोचता है, यह निराशावादी दृष्टि दूर होनी चाहिए। आशा का संचार होना चाहिए। अब हम सब कार्यों से निवृत्त हैं। जी भर कर समाज सेवा करने का समय आ गया है। देश भ्रमण, धर्म कर्म करने का पर्याप्त अवसर मुझे उपलब्ध है। ऐसा विचार कर कार्य में लग जायें।

मनुष्य को जहां सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए का उपदेश है, वहीं **कुर्वन्नेवेह कर्माणि** के रूप में दीर्घायु का उपाय भी दिखाया गया है। अर्थात् निरन्तर यज्ञादि श्रेष्ठ कार्य करते हुए ही जीने की इच्छा करनी चाहिए। कर्मशील व्यक्ति स्वस्थ रहता है, लम्बा जीता है। कर्महीन व्यक्ति को वेद में दस्यु (डाकू) कहा गया है। **'अकर्मा दस्यु:'** दस्यु सबके कार्यों को बिगाड़ता है, इससे वह शान्ति को तो प्राप्त कर ही नहीं सकता। अशान्त व्यक्ति को सुख शान्ति नहीं मिलती। गीता कहती है-**'अशान्तस्य कुत: सुखम्'**। यजुर्वेद के 40वें अध्याय का प्रथम मन्त्र दीर्घायु के 3 उपाय बताता है-

ईशावास्य मिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृध: कस्य स्विद्धनम्।

प्रथम उपाय है ईश्वर में दृढ़ आस्था, उसकी सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता का अनुभव करना। हमारे प्रत्येक कार्य को ईश्वर देखता जानता है, ऐसा भाव भरने पर हम स्वयं को गलत कामों से बचा सकते हैं। ईश्वर का भय हमें सत्कर्म करने की प्रेरणा देगा। सत्कर्म शान्ति व और दीर्घायु देंगे।

(क्रमश:)

स्वामी दयानन्द जयन्ती एवं बोधोत्सव

आर्य समाज सनौर में प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस तथा बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रात: ध्वजारोहण हुआ। इक्कीस (21) कुण्डीय यज्ञ श्री ओंकार नाथ शस्त्री जी ने करवाया जिसमें खन्ना मैडिकल एजैंसीज़ पटियाला के मालिक रविन्द्र खन्ना व रीटा खन्ना यजमान बने। स्थानीय स्कूलों से आए प्रिंसिपल्ज़ श्रीमती हरदीप कौर, नीना शर्मा, श्री गोपाल कृष्णा, मन्जीत सिंह हांडा, हरमेल सिंह व सुरेन्द्र बदरू तथा मुख्य अतिथि एम. सी. सुनीता रानी व ब्रिज भूषण ने यज्ञ में भाग लिया। भारी संख्या में शहर के लोग तथा एक सौ से ज़्यादा स्कूली बच्चों ने अध्यापकों सहित यज्ञ में भाग लिया।

इस अवसर पर स्कूली बच्चों के खेल करवाए गए जिसमें आर्य माडल स्कूल, रैड रोज़, एवरग्रीन, नैशनल, माडल तथा पैकस पब्लिक स्कूल के लगभग एक सौ बच्चों ने भाग लिया। यज्ञ उपरान्त विजेता तथा भाग लेने वाले सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। सभी स्कूलों से आए प्रिंसिपल्ज़ को प्रधान राजेन्द्र वर्मा, मन्त्री संतीश बदरू तथा महिन्द्र बदरू ने सम्मानित किया।

श्री ओंकार नाथ शास्त्री जी के प्रवचन हुए। अनीशा खन्ना तथा चिंक ने स्वामी जी के जीवन पर विस्तृत जानकारी दी। प्रधान राजेन्द्र वर्मा ने कहा ''आर्य समाज पाखण्ड, अन्धविश्वास, बाल विवाह तथा जातीय भेदभाव का विरोधी तथा स्त्री शिक्षा, वेद ज्ञान, यज्ञ तथा देश प्रेम का समर्थक है।

प्रधान राजेन्द्र वर्मा, मन्त्री सतीश बदरू ने आए हुए मेहमानों का धन्यवाद किया।

शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री नरेश भाटिया, सुशील मेहता, प्यारा लाल तथा अजय बदरू की देख रेख में सांय तक ऋषि भोज चला।

-प्रधान आर्य समाज मन्दिर सनौर (पटियाला)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिन मनाया

आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 193वाँ जन्म दिन श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सायंकाल पं० कमलेश कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ करवाया गया जिसमें मुख्य यजमान श्री ओम प्रकाश रहेजा जी बने। यज्ञ के पश्चात् भज़नों का कार्यक्रम करवाया गया जिसमें कोटकपूरा से डा० बिशेष बुद्धि राजा जी एवं फरीदकोट के अजय कुमार (रिंकू) जी के सुन्दर भजन हुए जिसमें देव दयानन्द देख लिया तरै कारण। बताये तुम्हें हम दयानन्द क्या थे। ये दयानन्द तुने हलाहल पीकर जिन्दगी दी हमको आदि भजन गाये गए। इस अवसर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक आचार्य नारायण सिंह जी ने सभी को महर्षि जी के उपकार व उनके द्वारा किये गए कार्यों को विस्तारपूर्वक बताया और स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उनकी शिक्षाओं और सिद्धान्तों को आर्य समाज के परिपेक्ष्य में प्रस्तुत किया। आर्य समाज की स्थापना उसका उद्देश्य, सामाजिक कुरीतियों का निराकरण कैसे हो, उन्होंने अपने जीवन में राष्ट्र को उन्नत करने, नारी जाति के उत्थान, वैदिक संस्कृति का प्रचार प्रसार आदि के लिए ऋषिवर ने अनथक प्रयास किया, सत्यार्थ प्रकाश जैसे अमूल्य ग्रन्थ को रचकर महत्वपूर्ण कार्य किया। इस अवसर पर शहर के गणमान्य व विद्वान व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति डॉ० निर्मल कौशिक जी भी उपस्थित हुए थे। आर्य समाज के सभी सदस्यगण एवं स्त्री समाज की माताएँ उपस्थित थी। आर्य समाज के पुरोहित और विद्वान पं० कमलेश कुमार शास्त्री जी ने सुचारू रूप से मंच संचालन किया। अन्त में प्रधान कपिल सहूजा जी ने सभी का धन्यवाद किया व मन्त्री सतीश कुमार शर्मा जी ने सभी का उत्साह वर्धन करते हुए कहा कि आर्य समाज इसी प्रकार और कार्यक्रमों को करता रहेगा। शान्ति पाठ के बाद सभी को ऋषि लंगर करवाया गया।

-प्रधान आर्य समाज मन्दिर मेन बाजार, फरीदकोट

आर्य समाज जीरा में ऋषिबोधोत्सव पर्व मनाया गया

आज दिनांक 24-02-2017 को आर्य समाज जीरा में बड़ी ही श्रद्धा व हर्षोल्लास पूर्वक ऋषिबोधोत्सव पर्व मनाया गया, जिसमें आर्य सज्जनों व माताओं-बहनों तथा बच्चों की काफी संख्या देखी गई। सभी ने इस पर्व पर खुद के भी जीवन सुधार करने का संकल्प दोहराया, जिसमें सर्वप्रथम 'वृहद् यज्ञ' पुरोहित पं० किशोर कुणाल जी ने करवाया। मुख्य यजमान के पद को समाज के प्रधान श्री सुभाष चन्द्र जी आर्य ने अलंकृत किया। पुरोहित पं० किशोर कुणाल जी ने यज्ञ सम्पन्न करने के पश्चात् सबसे पहले उपस्थित आर्य भाई-बहनों एवं बच्चों को इस पर्व की ढेर सारी शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ दीं। उसके बाद 'ऋषि जो अगर न आते हम पार कैसे होते' भजन को सुनाकर सबका हृदय गद्-गद् कर दिया। साथ ही ऋषि के जीवन वृत्त पर भी विस्तार से रोशनी डालते हुए कहा कि ''ऋषिबोधोत्सव मनाने का साफल्य इसी में है कि हम भी अपने जीवन में कुछ अच्छाईयाँ भरना सीखें। समाज को नई रोशनी दें।'' अन्त में प्रधान जी ने भी सभी जनों को शुभ आशीर्वाद देते हुए कहा कि ''हमें इसी उल्लास व विश्वास के साथ सभी पर्वों को मनाकर जीवन में कुछ नए ज्ञान ग्रहण करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।'' अन्त में शांति पाठ के बाद प्रसाद के रूप में सन्तरे और केले पुरोहित जी के कर कमलों द्वारा बाँटे गए।

-मंत्री

आर्य समाज मन्दिर गुरदासपुर में शिवरात्रि उत्सव मनाया गया

तिथि 24-2-2017 को आर्य समाज मन्दिर गुरदासपुर की ओर से शिवरात्रि उत्सव बड़ी श्रद्धा से सुबह 8 बजे से 11 बजे तक मनाया। पहले इस समाज के योग्य शास्त्री श्री राम निवास जी ने हवन यज्ञ बड़ी लगन से करवाया। उस के बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवनी सम्बन्धी अपने विचार दिए और लगभग काफी बड़े समूह को आर्य समाज की शिवरात्रि के बारे में व्याख्यान दिया और लोगों को बताया कि सच्चे शिव की खोज ऋषि जी ने कैसे की। हमें भी उनके मुताबिक यह उत्सव हर साल अपने घरों एवं समाज में आकर मनाना चाहिए ताकि परिवार के सब सदस्यों पर आर्य समाज के संस्कार पड़े और सच्चे शिव को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज के दस नियमों पर चल कर अग्रसर हो। स्कूलों से आए हुए बच्चों ने स्वामी जी की जीवनी पर भजन एवं भाषण देकर वातावरण मधुर बना दिया।

आखिर में आर्य समाज के प्रधान गुरवचन आर्य ने सब उपस्थित लोगों का हार्दिक धन्यवाद किया और सब से प्रार्थना की कि रोज आर्य समाज में आकर शास्त्री जी के माध्यम से वेदों ज्ञान प्राप्त करें और वेदों में ऋषियों द्वारा ज्ञान सूत्र को अपना कर जीवन सफल करें।

प्रधान जी ने लोगों के घरों में जाकर बीस सत्यार्थ प्रकाश बांटे।

कार्यक्रम के अन्त में शान्ति पाठ के बाद, प्रसाद वितरित किया गया।

-गुरवचन आर्य प्रधान

''ईसाईयत छोड़कर वैदिक धर्म में प्रवेश''

आर्य जगत के लिए आज का दिन बड़े हर्षोल्लास का दिन है क्योंकि दिनांक 26-02-2017 को ईसाईमतावलम्बी राजदीप बक्स सुपुत्र स्व. श्री एस. के. बक्स ने ईसाई मत को छोड़कर वैदिक धर्म को अपनाने के लिए सहर्ष आर्य समाज मंदिर शिमला में आए। आर्य समाज व वेद के सिद्धान्तों से सुपरिचित होने के पश्चात उन्होंने इस धर्म में प्रवेश करने के लिए अपना प्रार्थना पत्र शपथ पत्र के साथ दिया जिसे आर्य समाज के महामन्त्री श्री हृदयेश आर्य ने स्वीकृत किया और विधिवत शुद्धि संस्कार के साथ आचार्य रामानन्द जी के ब्रह्मत्व में तथा पं. रविन्द्र शास्त्री के पुरोहित्य में इनका शुद्धि संस्कार किया गया। इन्होंने भी सहर्ष संकल्प के साथ तथा यज्ञोपवीत धारण करते हुए वैदिक धर्म को स्वीकार किया तथा आजीवन इस धर्म को अपने जीवन में अनुपालन करने की प्रतिज्ञा की तथा अपना नाम राजदीप बक्स को छोड़ कर राजदीप आर्य स्वीकार किया। आर्य समाज लोअर बाज़ार में वर्तमान के इतिहास में इस दिन को स्वर्णिम दिन के रूप में याद किया जाएगा। आर्य समाज की तरफ से इन्हें ऋषि दयानन्द का साहित्य भेंट किया गया तथा आर्य समाज के दैनिक व साप्ताहिक सत्संग में आने के लिए इन्हें आमंत्रित किया गया। जिसे इन्होंने स्वीकार किया। यह परिवार मूलत: हिन्दू परिवार था परन्तु हिन्दुओं की नालायकी के कारण इनके पिता जी ने ईसाईयत को स्वीकार किया था परन्तु वर्तमान में वैदिक धर्म से प्रभावित होकर इन्होंने सहर्ष इसे स्वीकार करने का निर्णय लिया जो आर्य समाज के लिए गौरव की बात है।

-मन्त्री आर्य समाज मंदिर लोअर बाज़ार शिमला (हि. प्र.)

ऋषि बोध उत्सव शिवरात्री पर्व मनाया

आर्य समाज धूरी में दिनांक 24-02-17 दिन शुक्रवार के ऋषि बोध उत्सव-शिवरात्री का पावन पर्व हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रीमान प्रहलाद कुमार आर्य (प्रधान) की अगुवाई में एवं समाज सेवक महाशय प्रतिज्ञापाल जी की अध्यक्षता में मनाया गया। सर्व प्रथम पं० शैलेश कुमार शास्त्री जी ने विशेष यज्ञ करवाया। जिसमें यज्ञ के मुख्य यज्ञमान आर्य समाज के प्रधान कोषाध्यक्ष विवेक जिन्दल, सोम प्रकाश आर्य धर्मदेव हूमन, व आर्य समाज के अधिकारीगण इस यज्ञ में उपस्थित होकर सभी ने आहूतियां डाल कर ज्ञान प्राप्त करने की प्रार्थना की। उद्‌बोधन करते हुए शास्त्री जी ने शिवरात्री व ऋषि बोध उत्सव पर महर्षि दयानन्द जी की बातों को ध्यान में रखते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने तीन हजार ग्रन्थों के गहन स्वाध्याय के बाद यह पाया कि वेदों से मनुष्य का मनुष्यपन और सत्यज्ञान सुरक्षित रह सकता है। ऋषि ने आह्वान किया वेदों की ओर लौट चलो ''यही सुखी जीवन का मूल मन्त्र है। वेदोऽखिलो धर्म मूलम (मनु) ''सुराज्य से स्वराज्य हजार गुणा अच्छा है।

ऋषि ने स्वराज्य की ऐसे समय में आवाज बुलन्द की जब भारतीयों के लिए स्वराज्य शब्द का नाम भी भयंकर था। ऋषि ने स्वराज्य की ऐसी चिंगारी फूंकी की सारा देश आपसी मत-भेदों को भुलाकर एकता के सूत्र में बंध गया। आनन्द सुधाकर दया का पिला गया, भारत को दयानन्द दुबारा ज़िला गया।

दो शब्द-सोया संसार आर्यों का, छाया अज्ञान अंधेरा था।
ये रवि-शशि तारक दीप बुझे, रजनी से दूर सवेरा था।
तब किया आपने ज्योतिदान, हे दयानन्द ऋषि वर महान।

उसके बाद आर्य कालेज आर्य सी० सै० स्कूल, यश चौधरी आर्य मॉडल स्कूल के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं ऋषि के प्रति भजन व अपना विचार प्रस्तुत किया। मंच का संचालन करते हुए आर्य समाज के महामंत्री राम पाल आर्य ने ऋषि बोध उत्सव पर प्रकाश डालें व समान्य ज्ञान को बढ़ाने हेतू प्रश्नोतरी की गई, विजेता को ईनाम दिया गया।

आर्य समाज के प्रधान जी ने आए हुए सभी लोगों व तीनों संस्थाओं के अध्यापक-अध्यापिका का धन्यवाद किया और स्वामी दयानन्द के विचार को अपने जीवन में अमल करने का सब को आवाहन किया।

इस अवसर पर उपस्थित रहे। असोक जिन्दल, रमेश आर्य, डा० राम लाल आर्य, डा० सुरजीत सरीन, विकास जिन्दल, सतीश पाल आर्य, राजीव मोहिल, श्रीमति कृष्णा आर्य, व आर्य समाज के सभी अधिकारीगण प्रिसिपल बी० एल कालिया, प्रिसिपल मोनिका वाट, निशा मित्तल, धुरी शहर के सभी गणामान लोग उपस्थित रहे।

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

-प्रधान आर्य समाज धूरी

ऋषिबोधोत्सव

आज दिनांक 24-2-2017 को आर्य समाज मन्दिर तलवाड़ा में ऋषिबोधोत्सव बड़ी श्रद्धा पूर्वक मनाया गया। प्रातः आठ बजकर तीस मिनट पर वैदिक सन्ध्या का पाठ किया। उस के पश्चात् वृहद् हवन यज्ञ किया गया। हवन यज्ञ के पश्चात् आर्यसमाज के 10 नियम और संगठन सूत्र का पाठ किया। पश्चात् पुरोहित परमानन्द जी के ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में विचार दिये कि किस प्रकार ऋषि दयानन्द सरस्वती जी को बोध हुआ। ऋषि ने कष्ट सह कर भी संसार का भला किया। वेद का प्रचार करते हुए भी शास्त्रार्थ किये। सारे भारत वर्ष में घूम कर सन्य सतानत वैदिक धर्म का कार्य किया। आर्य समाज की स्थापना करके संसार में विद्या का प्रसार किया। शान्ति पाठ के पश्चात प्रशाद वितरण किया।

-परमानन्द आर्य

बरनाला में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज बरनाला के प्रधान डा. सूर्यकान्त शोरी तथा गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला के प्रधान भारत भूषण मैनन के निर्देशानुसार आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस आज गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम पुरोहित रणजीत शास्त्री द्वारा यज्ञ विशेष मन्त्रों द्वारा आहुतियाँ डाल कर सम्पूर्ण कराया। सभी अध्यापक एवं विद्यार्थियों ने ध्यान मग्न होकर यज्ञ किया।

स्कूल अध्यापक राम चन्द्र आर्य तथा विद्यार्थियों द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। रणजीत शास्त्री द्वारा स्वामी जी के जीवन बारे विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। स्कूल प्रिंसीपल रामकुमार सोबती ने विद्यार्थियों को स्वामी दयानन्द की देन, आर्य समाज की स्थापना, नैतिक शिक्षा की महत्ता बारे जानकारी दी। सभी को उन द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक पढ़ने हेतु प्रेरणा दी गई। प्रोग्राम में मीनाक्षी जोशी, सुमन लता, राज महिन्द्र, बीना रानी, चरणजीत शर्मा, निर्मला देवी, नवीना रानी, रीटा रानी, प्रवीण कुमार के अतिरिक्त समूह अध्यापक व विद्यार्थी उपस्थित थे।

-रामचन्द्र आर्य (अध्यापक)

ऋषि बोध उत्सव तथा जन्मदिवस एवं शिवरात्रि पर्व मनाया

फिरोजपुर शहर आर्य समाज मन्दिर, गुरुकुल विभाग में ऋषि बोध उत्सव, जन्मदिवस तथा शिवरात्रि पर्व बड़े हर्षोल्लास साथ मनाया गया। जिसमें फिरोजपुर शहर छावनी तथा बस्ती टैंकावाली से बहुत से सदस्यों ने भाग लिया। पंड़ित सुनील शास्त्री जी ने मोगा से विशेष रूप से भाग लिया। वह यज्ञब्रह्मा बने। चार यजमानो श्री राजीव गुलाटी महामन्त्री, अशीश मल्होत्रा, महेश जी तथा ईशु मोंगा सभी अपनी-अपनी पत्नी साहित यजमान बने तथा बड़ी श्रद्धा के साथ उन्होंने मृत्युजंय महायज्ञ में भाग लेने हेतु यजमान पद पर आसीन हुए उन्होंने अपने प्रवचनो में महर्षि दयानन्द जी के जीवन काल बारे बताते हुये कहा कि आज का दिन हमें बड़ी धूमधाम से मनाना चाहिये क्योंकि दयानन्द ही ऐसे इन्सान थे जिन्होंने नारि जाति का सम्मान कैसे किया जाये लोगों को सिखाया यदि हम स्वामी दयानन्द के मुंह से निकले शब्दो को याद रखते तथा उस पर अमल करते रहते, तो आज कोख में बेटियो को खत्म ना करते, आज़ हमें बेटियो को बचाने के लिये बड़े-बड़े बोर्ड ना लगाने पड़ते। हमें आज ही अपने मन में यह बात बैठा लेनी चाहिये कि स्वामी दयानन्द की शिक्षा को हमने आगे बढ़ाना है।

इसके बाद पं सुनील शास्त्री जी ने शिवरात्रि बारे बताया, शिवरात्रि का अर्थ क्या है तथा हम इस पवित्र पर्व को गलत ढंग से मनाकर अपने इस पर्व का अपमान कर रहे है सो हमें अपने पुराने ऋषि मुनियो की ओर देख कर उनके बताये अनुसार हमें पर्व मनाने चाहिये।

बाद में प्रधान श्री इन्द्रजीत भटिया ने सभी का धन्यवाद किया। ऋषि लंगर का प्रबन्ध विपन धवन उपप्रधान जी द्वारा किया गया तथा सारा खर्चा लंगर का वही करेगे ऐसी घोषणा की गई। प्रमुख सदस्य जिन्होंने इस महायज्ञ में भाग लिया। श्री हरिराम खिदड़ी, श्री नरेन्द्र मोगा जी, श्री अजय चावला एडवोकेट, श्री महेन्द्र पाल बजाज, सतीश शर्मा एडवोकेट सुरिन्द्र वोहरा, पवन शर्मा जी, श्री आहूजा जी छावनी से, अशोक छाबड़ा जी, श्रीमति प्रेम सखी, सन्तोष भाटिया, सुनीता भाटिया, सृष्टि छाबड़ा, श्रीमति रविन्द्र मोगा तथा बहुत से गणमान्य सदस्यों ने भाग लिया।

-विपन धवन उपप्रधान मो० 94173-30786

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी की ओर से अन्न-वस्त्र सहयोग

''नर सेवा ही नारायण सेवा है'' इस कहावत को ध्यान में रखकर गुरुकुल हरिपुर, जुनानी समय-समय पर ओड़िशा एवं ओड़िशा से बाहर राज्यों में गरीबों, अनाथों, विधवाओं, विधुरों एवं दिव्यांग भाई-बहनों, माताओं एवं वृद्ध असहाय महानुभावों को अन्न व वस्त्र सहयोग के रूप में प्रदान करते रहता है। इसी क्रम में 19-20 फरवरी 2017 दिन रविवार, सोमवार को नुआपड़ा जिला के विभिन्न गावों के 500 परिवार को 25-25 किलो चावल एवं एक-एक साड़ी प्रदान किया गया। ध्यान रहे ऐसे असहाय व्यक्तियों को सहयोग किया गया जो वितरण केन्द्र तक चलकर आने में असमर्थ थे, वैसे असहाय लोगों को गुरुकुल की गाड़ी उनके घर जाकर उनको वितरण केन्द्र तक लाकर तथा उन्हें सहयोग देकर पुनः घर वापस छोड़ी। वितरण केन्द्रों में पहले वैदिक यज्ञ, प्रवचन तदुपरान्त सहयोग लेने आये हुए जनों को सहयोग प्रदान किया गया। कार्यक्रम में आये हुए सभी महानुभवों के लिये भोजन का उचित प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया गया था। यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के हितैषी श्री विजय कुमार लाहोटी, रायपुर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य की देख-रेख में गुरुकुल के आचार्य श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु एवं श्री धर्मराज पुरूषार्थी जी के पुरूषार्थ से तथा स्थानीय महानुभावों की मेहनत से सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में बोधोत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज, वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारी लाल आर्य, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी एवं कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा (बाएं) तथा (दाएं) इस अवसर पर निकाली गई शोभा यात्रा का भव्य दृश्य।

गत वर्षों की भान्ति इस साल भी महर्षि स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिन एवं ऋषिबोधोत्सव 20-2-2017 से 26-2-2017 तक बड़ी श्रद्धा एवं धूम धाम से मनाया गया। जिसमें एक सप्ताह तक ज्ञान जागृति सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसमें महात्मा विशोका यति जी ने अपने मुखारविन्द से श्रोताओं को निहाल किया और बच्चों को आर्य समाज में काम करने की प्रेरणा दी, सप्ताह के आरम्भ में प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। वेद सभा के बाद रोजाना लंगर का आयोजन किया गया।

मुख्य उत्सव 26-2-2017 को स्वामी विशोका यति जी व पं मनोहर लाल जी द्वारा विश्व शान्ति महायज्ञ का व्यापक तरीके से बहुत अच्छा आयोजन किया गया। फिर प्रेम भारद्वाज जी महामंत्री द्वारा ध्वजारोहण किया गया। उनके साथ श्री अशोक परूथी ऐडवोकेट रजिस्ट्रार श्री सुधीर शर्मा कोषाध्यक्ष जी सरदारी लाल जी वरिष्ठ उपप्रधान सब ने बड़े प्यार और श्रद्धा से उस कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया। आर्य महा सम्मेलन में माता सत्या, माता वीरां, बहन कान्ता, माता शीला द्वारा बहुत अच्छे भजनों का आयोजन किया गया और श्री प्रेम भारद्वाज महा मंत्री, श्री अशोक परूथी ऐडवोकेट, महात्मा विशोका यति जी महाराज श्री सरदारी लाल जी, आर्य रत्न द्वारा सम्मेलन को सम्बोधित किया गया, और महामन्त्री द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान जी सुदर्शन शर्मा जी का बधाई संदेश भी कहा गया, प्रधान जी किसी जरूरी काम के लिए जालन्धर से बाहर थे। उसके बाद विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें बैंड बाजों के साथ विभिन्न तरह की झांकीयां सारे जालन्धर की आर्यसमाजों द्वारा भरपूर सदयोग देकर इस शोभा यात्रा को सफल किया गया। उस के बाद कम्यूनिटी हाल में विशाल लंगर का आयोजन किया गया।

इस सारे आयोजन को सफल बनाने में श्री पं० मनोहर लाल, श्री बिशम्बर कुमार जी राज कुमार, राज कुमार रत्न, लाभ चन्द, श्री रमेश लाल Ex Bank मैनेजर, श्रीमति वीरा जी, श्री मति सत्या, बहन कान्ता, शीला जी, जगदीश जी, श्री रामेश आर्य, राकेश मोनू जी, ज्योति रत्न, श्री सोमनाथ, अरूण रत्न, पं. शशि कान्त, जी का विशेष योगदान रहा, शोभा यात्रा को सफल बनाने में आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दा, प्रधान यशपाल, आर्य समाज बाबा खेल जी ओ३म् प्रकाश, श्री सतपाल प्रधान आर्य नगर श्री राजपाल प्रधान गांधी नगर No-1 जी अमरनाथ आर्य गांधी नगर No-2 श्री जय चन्द प्रधान सन्त नगर, श्री सम्माराम आर्य समाज दयानन्द चौंक गढ़ा द्वारा सभी अपने-अपने आर्य समाजों के मैबरों को साथ ला कर सब ने खास सदयोग देकर सारे आयोजन को सफल बनाया।

–सुदेश कुमार रत्न आर्य समाज वेद मन्दिर

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।